RAJPUT TUTORIALS

इतिहास

Name : ....   Date : ...../...../.......

आंग्ल–मराठा संघर्ष

यूरोपीय शक्तियों को अंग्रेजों ने भारत में पराजित कर दिया गया। प्लासी और बक्सर के बाद बंगाल में उनकी सत्ता स्थापित हो चुकी थी। अंग्रेज शक्ति के लिए अब प्रमुख चुनौती मराठे थे। पानीपत के III युद्ध ने मराठों की कमर तोड़ दी थी लेकिन पुनः उन्होने शक्ति संचित की, परंतु उनकी आपसी फूट सदैव घातक रही। सर्वश्रेष्ठता के लिए भारत में 3 आंग्ल मराठा युद्ध हुआ।

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775 –1782 ईसवी)

इस युद्ध की प्रमुख वजह मराठों की आपसी फूट थी। इस समय वारेन हेस्टिंग गवर्नर जनरल था तथा मराठा पेशवा माधव नारायण राव था। जिसक अल्प वयस्क होने से शासन का कार्यभार नाना फड़नवीस के हाथ था।

नारायण राव के चाचा रघुनाथ राव ने पेशवा बनने के लिए अंग्रेजों से सहायता मांगी और यही से प्रथम आंग्ल–मराठा युद्ध की भूमिका तैयार हुई।

सूरत की संधि (1775)

इसके तहत अंग्रेजों ने रघुनाथ राव को पेशवा बनने में मदद का आश्वासन दिया। जिसे पूरा करने के लिए उन्होने मराठों से युद्ध कर उन्हें हराया।

पुरंदर की संधि (1776)

कलकत्ता परिषद ने सूरत की संधि को अस्वीकार कर पुरंदर की संधि मराठों से की और रघुनाथ राव को छोड़ दिया।

इस संधि को बंबई सरकार ने अस्वीकार किया। अतः वारेन हेस्टिंग को पुरंदर की संधि को पुनः मान्यता देने पड़ी और एक बार फिर अंग्रेजों व मराठों के बीच संघर्ष प्रारंभ हुआ।

सालबाई की संधि (1782)

सिंधिया की मध्यस्थता में हुई इस संधि के तहत माधव राव को पेशवा स्वीकार किया गया। इस संधि द्वारा अंग्रेजों व मराठों के बीच 20 वर्ष तक शांति रही।

द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध(1803–1805)

अंग्रेज गवर्नर वेलेजली के काल में II आंग्ल मराठा युद्ध हुआ। वेलेजली सहायक संधि के जनक थे और सहायक संधि की नीति किसी न किसी प्रकार से इस युद्ध का कारण बना।

इस युद्ध की प्रमुख घटना निम्नानुसार हुई–

इस संधि के द्वारा पेशवा ने अंग्रेजी संरक्षण स्वीकार किया और पूने में अंग्रेजी सेना रखने की बात भी मानी। बेसिन की संधि से नाराज होकर सिंधिया और भोसले अंग्रेजों के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनाया, पर वे हारे। भोंसले ने अंग्रेज से देवगांव की संधि की तथा सिंधिया को सुरजी अर्जुनमीन की संधि करनी पड़ी। इसक पश्चात होल्कर ने अंग्रेजों से संघर्ष किया और वह भी पराजित हुआ।

पेशवा– पूना सिंधिया– ग्वालियर भोसले– नागपुर गायकवाड़– बड़ोदरा होल्कर– इंदौर

तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध(1817–1819)

लॉर्ड हेस्टिंग के काल में यह हुआ। लॉर्ड हेस्टिंग ने जब 1817 में पिण्डारियों का दमन करना प्रारंभ किया तब मराठों ने इसे चुनौती माना। फलतः अंग्रेजों व मराठों में संघर्ष हुआ और पेशवा बाजीराव द्वितीय अंग्रेजों से हार गया।

पूणे की संधि के द्वारा पेशवा को मराठा संघ की प्रधानता छोड़नी पड़ी। सिंधिया व होल्कर भी अंग्रेजों से पराजित हुए।

पेशवा बाजीराव II अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की। लेकिन वह फिर से हार गया। अब अंग्रेजों ने पेशवा का पद समाप्त कर दिया और उसके संपूर्ण राज्य पर अपना अधिकार कर दिया।

आंग्ल मैसूर संघर्ष

मैसूर दक्षिण भारत का एक शक्तिशाली राज्य था। 1565 में तालीकोटा के युद्ध के बाद मैसूर एक स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। 1760 में हैदर अली ने मैसूर के वाडीयार वंश के शासक नंदराज को हटाकर सत्ता हस्तगत की।

1. प्रथम आंग्ल–मैसूर युद्ध(1767–1769)

प्रथम आंग्ल–मैसूर युद्ध के दौरान हैदर अली के विरूद्ध मराठा, निजाम एवं अंग्रेजों का त्रिगुट बना। लेकिन हैदर अली ने मराठों को धन देकर वापस भेजा तथा निजाम को भू–प्रदेश देने का लालच देकर अपने ओर मिला लिया। अंग्रेजों और हैदर अली के संघर्ष में अंग्रेजों को हैदर अली ने हराया व मद्रास की संधि (1769) के लिए मजबूर किया।

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध ने अंग्रेजों की सर्वश्रेष्ठता का मिथक तोड़ दिया। युद्ध के बाद हैदर अली और अंग्रेजों ने एक–दूसरे को मदद का आश्वासन दिया।

2. द्वितीय आंग्ल–मैसूर युद्ध (1780–1784)

मराठों द्वारा हैदर अली पर आक्रमण किए जाने पर अंग्रेजों ने उसे समुचित सहायता नहीं दी। इससे हैदर अली फ्रांसिसीयों से आकृष्ट हुआ।

फ्रांसिसीयों से निकटता से अंग्रेज हैदर से सशंकित रहने लगे। अविश्वास के इस वातावरण में हैदर अली ने निजाम व मराठों से मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ त्रिगुट बनाया।

अंग्रेजों ने गुंटूर का भू–भाग देकर निजाम को हैदर से अलग कर दिया तथा सालबाई की संधि 1782 के बाद मराठे भी युद्ध से अलग हो गए।

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

हैदर अली ने वीरता पूर्वक इस स्थिति का सामना किया। लेकिन युद्ध के दौरान 4 दिसम्बर 1782 को उसकी मृत्यु हो गई। हैदर के पुत्र टीपू सुल्तान ने युद्ध जारी रखा। दोनों पूत्रों में से कोई भी विजय प्राप्त नहीं कर सका। मंगलौर की संधि (1784) से द्वितीय आंग्ल–मैसूर युद्ध का अंत हुआ।

3. तृतीय आंग्ल–मैसूर युद्ध (1789–1792)

दक्षिण में अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए अंग्रेजों ने फिर से मराठों व निजाम से मिलकर त्रिगुट बनाया। टीपू द्वारा विदेशों में राजदूत भेजे जाने से अंग्रेज उससे नाराज हुए।

अंग्रेजों की मित्र राज्य त्रावनकोर पर टीपू द्वारा हमला किए जाने से ये युद्ध प्रारंभ हुआ। इस युद्ध में टीपू की पराजय हुई और वह श्रीरंगपट्टनम की संधि के लिए बाध्य हुआ।

श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792) द्वारा अंग्रेजों ने टीपू के राज्य का $\frac{1}{2}$ हिस्सा उससे छिन लिया तथा 3 करोड़ रू. युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में मांगे। जिनका भुगतान न करने पर टीपू के 2 पुत्रों को अंग्रेजों के पास बंधक रखा गया।

4. चतुर्थ आंग्ल– मैसूर युद्ध (1798–1799)

टीपू द्वारा नेपोलियन से पत्र व्यवहार किए जाने पर अंग्रेज उससे नाराज हुए। वेलेजली ने टीपू पर आरोप लगाया कि वह निजाम व मराठों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ षड्यंत्र कर रहा है। वह या तो सहायक संधि स्वीकार करे या युद्ध के लिए तैयार रहे।

चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध टीपू के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ। श्रीरंगपट्टनम के दुर्ग पर टीपू मारा गया। टीपू के परिवार की मैसूर में कैद कर लिया गया।

वाडीयार वंश के एक बालक कृष्णराज को सत्ता सौंप कर अंग्रेजों ने उस पर सहायक संधि थोप दी। मैसूर अर्ध अंग्रेजी राज्य बन गया। वेलेजली ने कहा आज पूरब का साम्राज्य मेरे कदमों पर पड़ा है। इंग्लैण्ड में वेलेजली को मार्कवीस की उपाधि दी गई।

भारतीय अर्थव्यवस्था– ब्रिटिश काल में भू–राजस्व व्यवस्था

प्राचीन काल से ही भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आश्रित रही है। अंग्रेजों के काल में भी राजस्व का सबसे बड़ा स्त्रोत कृषि भू–राजस्व ही था। अंग्रेजी राजस्व व्यवस्था भारतीय कृषि के लिए अत्यंत घातक सिद्ध हुई। यह किसानों के निर्मम शोषण का आधार बनी और इसने किसानों को अपनी ही जमीन पर मजदूर बना दिया। अंग्रेजों ने भारत पर मुख्यत: 3 प्रकार की भू–राजस्व व्यवस्थाओं का प्रतिपादन किया।

1. स्थायी बंदोबस्त–

कार्नवालिस ने इस व्यवस्था को जन्म दिया। यह ब्रिटिश भारत राज्य के 19% भू–भाग पर लागू की गई। इस व्यवस्था में एकत्रित कर का 89% सरकार तथा 11% जमींदार रखते थे। यह व्यवस्था बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा कर्नाटक में लागू की गई।

इस व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष यह था कि इसमें कर की दर निर्धारित नहीं की गई। अत: जमींदारों ने मनमाना कर वसूला और किसानों का शोषण किया। भूमि का मालिक जमींदार हो या किसान अपनी ही भूमि पर मजदूर बन गया। यह व्यवस्था जमींदार व किसानों के बीच संघर्ष का कारण बना।

अंग्रेजों को इस व्यवस्था से जमीदारों के रूप में एक समर्थक वर्ग की प्राप्ति हुई। लेकिन इस व्यवस्था से जमींदार भी दुष्प्रभावित हुए। इस व्यवस्था को सूर्यास्त का नियम भी कहा गया। क्योंकि इसमें एक निश्चित दिन के सूर्यास्त तक जो जमींदार कर नहीं चुका पाते थे उनकी जमींदारी छीन ली जाती थी।

2. रैय्यतवाड़ी–

यह व्यवस्था भारत के कुल भूमि के 51% भाग पर लागू हुई। और सर्वाधिक क्षेत्र में लागू होने वाली व्यवस्था बनी। इसके जनक थामस मुनरो व रीड थे।

रैय्यतवाड़ी का शाब्दिक अर्थ है रैय्यत अर्थात किसानों से सीधा संबंध। इस पद्धति के अनुसार किसान कर सीधे सरकार को चुकाता था। यह व्यवस्था मद्रास, बंबई, असम तथा कर्नाटक में लागू की गई।

इस व्यवस्था में लगान की दर बेहद ऊंची थी। गलत अनुमान करके कर निर्धारण से किसान लगान अदा करने पर असमर्थ होता था। जिससे अपनी भूमि बचाने के लिए उसे साहूकारों से कर्ज लेना पड़ता था। अतः इससे किसान साहूकार व सरकार के चंगुल में फंस गए और उसका व्यापक आर्थिक शोषण हुआ।

3. महालवाड़ी–

इस व्यवस्था का अर्थ ग्राम अथवा महाल से लिए जाने वाले कर व्यवस्था से है। यह व्यवस्था उत्तरप्रदेश, मध्य प्रांत तथा पंजाब में लागू की गई है। जो ब्रिटिश भारत का कुल 30% भू–भाग था। महालवाड़ी एक द्विस्तरीय व्यवस्था थी। जिसके अनुसार–

i. भूमि का मालिकाना हक कृषक को प्राप्त था तथा खेती के लिए वे व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी थे।

ii. सभी कृषक संयुक्त रूप से राजस्व भुगतान के लिए उत्तरदायी थे।

महालवाड़ी व्यवस्था में स्थाई बंदोबस्त और रैय्यतवाड़ी की अच्छाइयों का समावेश किया गया था। परंतु वास्तव में इस व्यवस्था को क्रियान्वित नहीं किया जा सका और भू–राजस्व का अधिकार गांव के बड़े परिवार समूहों अथवा मुखिया को दे दिया। जिन्होंने छोटे किसानों का शोषण किया।

ब्रिटिश भू–राजस्व नीति से भारतीय कृषि का परंपरागत ढांचा और उसकी आत्मनिर्भरता समाप्त हो गई। इसमें किसानों मजदूरों और दस्तकारों को बर्बाद कर दिया। तथा जमींदारों के रूप में नए संपन्न वर्ग के विकास किया। इन नीतियों का कृषि उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। जिसका परिणाम भारतीय कृषि व किसानों का पतन रहा।

स्थायी बंदोबस्त	– जॉन शोर	– कार्नवालिस
रैय्यतवाड़ी	– मुनरो, रीड	– लॉर्ड हेस्टिंग
महालवाड़ी	– मार्टिन बर्ड	– लॉर्ड हेस्टिंग